Vol 3 Issue 5 Nov 2013

Impact Factor : 1.9508 (UIF)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1.9508 (UIF)

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-5, Nov-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

1857 की क्रांति के समसामयिक परिस्थितियाँ एवं कारण : सागर–नर्मदा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

जितेन्द्र कुमार , मुकेश मान
(शोध निर्देशक) श्री जे.जे. टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनु (राज.)
(शोध छात्रा) श्री जे.जे. टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनु (राज.)

सारांशः भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भ में सन् 1857 की क्रांति तत्कालीन वीरों के तपस्या एवं बलिदान की शौर्य गाथा पर आधारित है। भारतीय सैनिकों, सामंतों एवं जनसामान्य के प्रति अंग्रेजों की दमनकारी नीति, फूट डालो राज करो का मंत्र एवं देशी गद्दारों के प्रभाव इत्यादि तथ्य नें भारतीय वीरों को स्वतंत्र भारत के लिए प्रेरित किया। करीब डेढ़ सौ वर्ष से अधिक हो चुके 1857 की क्रांति का ऐतिहासिक प्रारूप अग्रेजी इतिहास में भले ही सैनिक विद्रोह के रूप में उल्लिलखित हो परन्तु भारतीय इतिहास प्रमाण है कि यह मात्र सैनिक या असंतुष्ट राजाओं का विद्रोह नहीं था अपितु इसके पीछे जनता का सक्रिय योगदान था। भारतीय किसान, कारीगर, सिपाही, सन्यासी सहित कुछ देश प्रेमी सामन्तों ने अंग्रेजों के स्वार्थी नीति के खिलाफ सतत् विरोध प्रकट करते रहे जिसकी परिणति 1857 की 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' के रूप में हुई। इस क्रांति की तत्कालीन तथ्यात्मक समसामयिक परिस्थितियों एवं कारणों को भारतीय एवं पाश्चात्य इतिहासकारों नें अपने–अपने ग्रंथों में भी उल्लेख किया है। इन्हीं ग्रंथों को आधार बनाकर इस क्रांति के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है जो इस प्रकार है–

प्रस्तावनाः

रियासतों के कार्यों में हस्तक्षेप एवं अधिग्रहणः

कुछ सामन्त अथवा जमींदार जो अपने भारतीय सम्प्रभू को अपना शासक नहीं मानत थे वे व्यक्तिगत हित को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी सत्ता के प्रभाव में आ गये। फलतः रियासतों में आपसी एकता, विश्वास व सहानुभूति का अभाव होता चला गया। इससे रियासतें शक्तिहीन होती जा रही थी। अतः रियासतदार ईस्ट इंडिया कम्पनी की सहायता करने में ही अपना भाला समझने लगे।1 मैल्कम के अनुसार ''देशी रियासतों के राजाओं के पास दूरदृश्टि नहीं थी। तात्कालिक लाभ, द्वेष तथा लालसा की तृप्ति के लिए वे अपनी स्थाई स्वतंत्रता का बलिदान कर रहे थे।'' कम्पनी ने उचित–अनुचित का ध्यान किये बिना रियासतों के कार्यों में हस्तक्षेप किया तथा अपना प्रभुत्व जमाकर रियासतों को अपने अधिकार में लेने का सिलसिला जारी रखा। कम्पनी के इस कूटनीतिक सिद्धांतों के परिदृश्य में सन् 1757 ई. के प्लासी के युद्ध से लेकर सन् 1856 ई. तक बिहार, बंगाल, उड़ीसा, मद्रास, राजपूताना व मध्यभारत की रियासतों पर धीरे–धीरे कम्पनी का शिकंजा कसता गया और कम्पनी जो व्यापारी बनकर आई थी इस देश की मालिक बन गयी।

कालान्तर में कम्पनी नें देश में अपनें प्रभुत्व के फलस्वरूप छोटी से लेकर बड़ी वस्तुओं को अपने अधीन करने की नीति को प्रभावी किया। इससे साधारण वर्ग के जनता में ब्रिटिश कम्पनी के प्रति विरोधी भावनाएँ पनपने लगी।[2] कम्पनी द्वारा लगाये गये 'करों' का बोझ जनता व जमीदारों पर बढ़ने से जगह–जगह आन्तरिक विद्रोह होने लगे।[3] इसी सन्दर्भ में 1842 के 'बुन्देला विद्रोह' के क्षेत्र सागर, दमोह, नरसिंहपुर, चावरपाठा, तेन्दुखेड़ा, हीरापुर में पंद्रह साल पहले ठाकुरों और मालगुजारों ने अंग्रेजों की अधीनता और परतंत्रता स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।[4] अंग्रेजों की इस कपटपूर्ण व शोषाणकारी नीतियों से सम्पूर्ण सागर–नर्मदा क्षेत्र उद्वेलित हो उठा। कहीं–कहीं स्वं जनता ने तो कहीं रियासतों के प्रति स्वाभिमान ने जनता को ब्रिटिस विरोध में संगठित करना शुरू कर दिया।[5] कम्पनी के प्रभाव से तंग आकर विवेच्य क्षेत्र सहित बुंदेलखण्ड, छत्तीसगढ़, महाकौशल, मेवाड़ और हड़ौती रियासतों की प्रजा में तीब्र आक्रोश के भाव पैदो हो चुके थे।[6] उत्तर पश्चिमी प्रांतों में सेना और नागरिक वर्गों में व्याप्त आक्रोश यमुना पार कर बुन्देलखण्ड तक जा पहुँचा।[7] जन–जन के बीच लोककवि डूंगजी जवारजी की यह पंक्ति क्रांति का आव्हान कर ब्रिटिश चोला को उतार फेकने के लिए जनता को प्रेरित कर रही थी।

फिरंगी तो कसो दरपणो, करां समंदर पार जी।
अंगरेजां की लूट छावनी, करां जमीं पर नाम जी।
मरद मरे मरदां की मौता, कायर करै विचार जी।[8]

बुन्देला विद्रोहः

1857 की क्रांति की भूमिका बुन्देला विद्रोह (1842) से भी तैयार हो गयी थी। सन् 1818 में अंग्रेजों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय को कोरेगाँव (जनवरी 1818) और अस्थी (20 फरवरी 1818) के युद्धों में पराजित करके उसके सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार कर लिया था। पेशवा के पतन के पश्चात् 11मार्च सन् 1818 में सागर और दमोह जिला पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। 18मार्च तक रहली, गढ़ाकोटा, देवरी, जैसीनगर, शाहगढ़, सानौधा, बरोदिया, बाँदरी, धामौनी, खिमलासा, राहतगढ़, खुरई, नरयावली, बीना, ऐरन बत्तीसी (32 ग्रामों का समूह) के क्षेत्रों पर अंग्रेजों का अधिकार कायम हो गया। तत्पश्चात् 1820 में सागर–नर्मदा क्षेत्र का गठन हुआ और प्रारम्भ से राजस्व बन्दोबस्त करके बहुत से पुराने मालगुजरों को हटा दिया गया। तत्कालीन समय इस क्षेत्र में गौड़, लोधी और बुन्देला राजपूतों को भूमि पर अधिकर था। ज्ञात है कि बुन्देला मराठा शासन के दौरान अत्यधिक शक्ति सम्पन्न थे। परन्तु इस क्षेत्र पर अंग्रेजों को प्रत्यक्ष अधिकार हो जाने से इन बुन्देला जागीरदोरों पर सामन्य जनता के समान कर लगाये गये। इन्हें मराठा शासन काल की अपेक्षा तीनगुना लगान देना पड़ता था। जिन पर भू–राजस्व की बकाया राशि थी उन पर कानूनी कार्यवाही की गयी। अन्ततः उनकी जमीन एवं सम्पत्ति को अंग्रेजी सरकार अपने अधीन कर लिया।[9] भूमि और सम्पत्ति से रहित सागर–नर्मदा क्षेत्र के भूपतियों एवं जागीरदोरों ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक निश्चितताओं के कारण अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया जिसे सन् 1842 के 'बुन्देला विद्रोह' के नाम से जाना जाता है। इस विद्रोहा का नेतृत्व चन्द्रपुर के जवाहर सिंह, नारहट के मधुकर शाह, हीरापुर के हिरदेशाह लोधी आदि ने किया। अनेक मालगुजार, असन्तुष्ट जमींदार एवं गौड़ मुखिया बड़ी संख्या में अंग्रजों के विरूद्ध विद्रोहियों का साथ दिये। विद्रोहियों ने पुलिस चौकियों पर हमला करके अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। लगभग एक वर्ष तक सम्पूर्ण क्षेत्र में विप्लव चलता रहा परन्तु अंग्रेजों ने सख्ती से विद्रोह को दबाया। विद्रोही मधुकरशाह को फांसी देकर अन्य विद्रोहियों को बन्दी बना लिया गया। फलतः अप्रैल 1943 तक विद्रोह पर नियंत्रण कर लिया गया।[10] इस विद्रोह को अंग्रेजों ने बलपूर्वक कुचल तो दिया परन्तु जमींदारों एवं जनसान्य के साथ अपमानजनक व्यवहार एवं दमनकारी नीतियों के परिणाम स्वरूप सागर–नर्मदा क्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्ध स्थायी रूप से असन्ताष व्याप्त हो गया। कालान्तर मे यह असन्तोष एक बार पुनः 1857 के विद्रोह के रूप में सामने आया।

हड़प नीतिः

1857 की क्रांति का एक प्रमुख कारण तत्कालीन भारत के गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी भी था। लार्ड डलहौजी भारत के गवर्नर जनरल के रूप में 1856 में अपना कार्यकाल पूरा करके इस देश में असंतोष की विरासत छोड़ गया। इस असंतोष का एक मुख्य कारण उसके द्वारा अपनाई गयी ''हड़प नीति'' थी। इसके तहत भारत में अंग्रेजों की अधीनता के क्षेत्र को बढ़ाने के लिए जनसामान्य के सम्पत्तियों को हड़प लिया गया। लार्ड डलहौजी के नीति के अन्तर्गत[11] परतंत्र राज्यों में अथवा उन राज्यों में जिनका अस्तित्व अंग्रेजों की ताकत पर टिका था, जब राजवंश का कोई स्वाभाविक उत्तराधिकारी नहीं रह जाता था तो उसे हड़पकर

ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था। इस प्रकार के राज्यों में सतारा 1448 में, जैतपुर और सम्बलपुर 1849, बगहर 1850 में, उदयपुर 1852 में, झाँसी 1853 में और नागपुर को 1845 में मिला लिया गया। इस प्रकार ये छोटे–छाटे राज्य अब अंग्रजी शासन के अधीन हो गये। इसी क्रम में सागर और नर्मदा क्षेत्र को अंग्रेजों ने 1818 में मराठों से छीन लिया था। यहाँ हडप़नीति की समस्या तो उत्पन्न नहीं हुई किन्तु सामंतो और सरदारों में यह अन्य रूप में सामने आयी जिनके संताप ने 1857 के विद्रोह में काफी बड़ी भूमिका अदा की।[12]

धार्मिक कारण–

ईसाई मिशनरियाँ और उनकी गतिविधियाँ:

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ ही यहाँ ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ बढ़ गयीं। वे लोग सार्वजनिक स्थानों पर धर्म परिवर्तन सम्बन्धी प्रवचन देते थे। जहाँ वे न केवल अपने धर्म सिद्धांतों का प्रचार करते थे बल्कि अन्य धर्मों के संस्कारों तथा प्रथाओं का मजाक भी उड़ाते थे। चूँकि उनके साथ अक्सर पुलिस प्रशासन मौजूद रहती थी अतः लोग उन्हें ईसाई सरकार के सहायक मानते थे । सर सैयद अहमद खान ने मिशनरियों के सम्बन्ध में लिखा है कि[13] ''आम तौर पर यह माना जाता था कि मिशनरियों को सरकार ने नियुक्त किया है और वही उनका निर्वाह कर रही है। परन्तु अपनी संस्थाओं में भी मिशनरियाँ शिक्षा के काम तक सीमित नहीं थी। बल्कि उनके लिए धर्मपरिवर्तन पश्चिमी शिक्षा का अनिवार्य अंग था।'' परीक्षा मे ईसाई धर्म पर भी एक विषय होता था। इसके अलावा फौजी छावनियों में मिशनरी द्वारा किये जाने वाले ईसाई सिद्धांत से सिपाहियों की धार्मिक भावना आहत हुई और उन्हें सरकार के वास्तविक उद्देश्य को लेकर संदेह होने लगा।[14]

अंग्रेजों द्वारा भारतीय सभ्यता व संस्कृति की प्रचलित मान्यताओं, परम्पराओं व विश्वासों पर एक प्रकार से आक्रमण कर षडयंत्रपूर्वक ब्रिटिश सभ्यता को यहाँ के लोगों पर लादने का सुनियोजित प्रयास था।[15] इसी सन्दर्भ में तत्कालीन समाज में स्थापित हो चुकी सती प्रथा के रोक ने अनेक राजवाड़ों व राजपूत जाति के लोगों को नाराज कर दिया था। यद्यपि सती प्रथा अमानवीय प्रथा थी एवं बदलती हुई परिस्थितियों में इसका कोई औचित्य भी नहीं था। फिर भी सामाजिक जड़त्व के कारण भारतीय जनमानस में सुधारवादी नये कानून को मान्यता नहीं मिली। उदाहरण स्वरूप मध्यभारत की रियासत झालावाड़ में नरेश मानसिंह की मृत्यु होने पर उनकी पत्नी सती हो गयी (1845)। उत्तराधिकारी नरेश केवल 12 वर्ष का था। उसे कम्पनी सरकार ने इस सती प्रकरण पर गद्दी से अपदस्त करने तक की चेतावनी दी व घोर विरोध जाहिर किया। बाद में नरेश द्वारा क्षमायाचना पर प्रकरण शांत हो सका। लेकिन जनता कम्पनी सरकार के इस घटना से क्षुब्ध हो गयी।[16]

सैनिक कारण

सैनिकों पर नये–नये नियमों के कारण ज्यादा पाबंदियाँ लगा दी गयी थी। नये डाक अधिनियम ने सैनिकों को प्राप्त निःशूल्क पत्राचार की सुविधा समाप्त कर दी। 1856 में एनफील्ड नाम की रायफल भारत में लायी गयी जिसमें चिकनाईयुक्त (ग्रीस लगी हुई) कारतूस का उपयोग होता था। नये कारतूसों के उपयोग के लिए सिपाहियों को उनके ग्रीस लगे हिस्से को हाँथ से हटाने के बजाय दाँत से छीलकर हटाना पड़ता था।[17] अप्रैल 1857 में बंगाल रेजीमेन्ट से भड़काने वाले कुछ पत्र सागर पहुँचे। रेजीमेन्ट नें यह आरोप लगाया कि ग्रीस लगी हुई नई बन्दूक की गोलियां उनके धर्म पर कुठाराघात करने के लिए है। जल्दी ही यह संदेह बढ़ गया कि चिकनाई लगे कारतूस में गाय और सूअर की चर्बी लगायी गयी है जिससे हिन्दू और मुसलमानों का धर्म भ्रष्ट हो सके। अन्त में स्पष्ट हुआ कि सिपाहियों का यह संदेह निराधार नहीं था।[18] यह पता चला कि 'बुलिच' शस्त्रागार में गाय और बैलों की चर्बी प्रयोग की जाती थी। अतः सैनिकों ने यह कहना आरम्भ कर दिया कि ब्रिटिश कम्पनी औरंगजेब की भूमिका में है और अब सैनिकों को शिवाजी बनना है।[19] फलतः चर्बी लगे कारतूसों की घटना ने मेरठ, बंगाल, दमोह सहित जबलपुर रेजीमेंट में चिंगारी सुलगा दी। हिन्दू और मुसलमान दोनों इस घटना से उद्वेलित हो उठे। सिपाहियों ने इस क्रांति को नेतृत्व प्रदान करने की पहल की। सागर और नर्मदा क्षेत्रों में सागर जिले में थर्ड इररेग्युलर कवलरी और 42वीं रेजीमेंट्री ऑफ बंगाल नेटिव इनफेन्ट्री; दमोह जिले में 42वीं बंगाल नेटिव इनफेन्ट्री की दो कम्पनियों और जबलपुर जिले में 52वीं रेजीमेंट ऑफ द बंगाल नेटिव इनफेन्ट्री ने क्रांति के दौरान विद्रोह कर दिया।[20]

इसी प्रकार 6 मई 1857 को मेरठ में घुड़सवारों की एक टुकड़ी को अंग्रेज सिपाही चर्बी लगे कारतूस देनें का निश्चय किया। स्पर्श से मना करने पर उन्हें कोर्ट मार्शल के सामने खड़ा कर 85 घुड़सवारों को 10 वर्ष की सश्रम कारावास सुनाकर हाँथ एवं पैर में भारी–भारी बेड़ियां पहना दी गयी। परन्तु 9–10 मई 1857 को एक गुप्त तैयारी के साथ ''मारों फिरंगी को'' की ध्वनी के साथ सारा वातावरण गुज उठा।[21] यह विद्रोह इतना वृहत्त पैमानें पर था कि इससे भारत में अंग्रेजो की जड़ें हिल गयी।

एक अन्य घटना में 10मई 1857 कों नीमच छावनी में यह बात फैल गयी कि घी, शक्कर और आटे में सरकार के आदेश से सुअर और गाय के खून को तथा हड्डियों का चूरा मिलाया जा रहा है[22] और अंग्रेजी सरकारी यह काम यहाँ के लोगों का धर्म भ्रष्ट करने के लिए कर रही है। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए मेवाड़ के वकील अर्जुनसिंह ने आटे को अपनी जबान पर रखकर सैनिको का भ्रम दूर करने का प्रयास किया।[23] मेजर एर्सकाइन ने तस्दीक दी कि नीमच, सागर, दमोह, और जबलपुर की ये कहानी कि आटे और शक्कर में सरकार के हुक्म से सुअर और गाय के खून तथा उनकी हड्डियों के चूरे की मिलावट की गयी है इस तरह की सभी खबरें गलत है।[24] किन्तु इन खबरों और चर्चाओं से सैनिकों के साथ–साथ जनसामान्य में भी इस आशंका का संचार होने लगा कि सरकार जान–बूझकर उनके धर्म को नष्ट करने तथा उन्हें ईसाई बनाने का प्रयास कर रही है। इसी पृष्ठभूमि में मई और जून माह में झाँसी, मेरठ तथा दिल्ली के क्षेत्र में घटित विद्रोह की ज्वाला सागर–नर्मदा क्षेत्र तक आ गयी।

डॉ ताराचंद के शब्दों में ''धर्म पर खतरा विद्रोह का एक जबरदस्त कारण बना। क्योंकि हिन्दू अपने धर्म को जीवन का मुख्य स्रोत और अपने अस्तित्व की नींव समझते थे। अपने धर्म से अलग हिन्दू या मुसलमान बिना पतवार या डांड के नाव की तरह बिलकुल असहाय हैं। उनके लिए इससे भयानक कोई खतरा हो ही नहीं सकता।[25]

इसी प्रकार सन् 1856 में लॉर्ड केनिंग के ''जनरल सर्विस एनलिस्टमेन्ट एक्ट'' द्वारा और हिंसा भड़क उठी। इसमे कहा गया कि भविश्य में ऐसे किसी भी सैनिक को स्वीकार नही किया जायेगा जो यह शपथ न ले कि जहाँ उसकी सेवाओं की आवश्यकता होगी वह वहाँ जायेगा।[26] इस नये ऐक्ट को सिपाहियों ने बहुत बड़े खतरे की घंटी माना। क्योंकि इससे एक निश्चित षडयंत्र के तहत सिपाहियों को कहीं भी भेजा जा सकता था।

1857 की क्रांति के सम्बन्ध में लन्दन में बैठे हुए कार्ल मार्क्स पैनी दृटि रखे हुए थे। 1857–58 के दौरान मार्क्स ने स्वयं न्यूयार्क डेली ट्रिव्यून में इस क्रांति से सम्बन्धित 21 लेख लिखे। फलतः 15 सितम्बर 1857 को न्यायार्क डेली ट्रिव्यून में मार्क्स ने लिखा कि ब्रिटिश फौज क्रमशः क्रांति के समुद्र के बीच टापूनुमा चट्टानों पर बनी चाकियों की स्थिति में पहुँच रही है। सागर में 1857 में क्रांति मार्क्स का यह कथन सत्य प्रतीत होता है। तत्कालीन सागर का सेनानायक ब्रिगेडियर सेज अत्यन्त दूरदर्शी था। सागर में तैनात ब्रिगेड में यूरोपियन बंगाल आर्टिलरी तीसरी अनियमित घुड़सवार सेना, 31वीं बंगाल पैदल सेना और 42वीं बंगाल पैदल सेना सम्मिलित थी। क्रांमि की तीब्रता को भांपते हुए उसने 29जून 1857 को सभी यूरोपियों जिनमें 173पुरूष, 63महिलाएं एवं 134बच्चे थे को सागर के पुराने किले में पहुँचा दिया। किले में शस्त्रों एवं खजानों को भी सुरक्षित कर दिया। दीर्घ अवधि तक रूके रहने के लिए आवश्यक राशन का भी प्रबन्ध किया।[27] किन्तु 1जुलाई 1857 को प्रातः सैनिकों का असन्तोष विद्रोह के रूप में फुट गया। सागर में विद्रोह का ऐलान कानपुर निवासी 'शेख रमजान' ने मस्ज़िद में अपनी तलवार की धार तेज किया एवं नगाड़ा बजाते हुए विद्रोही सैनिक साथियों का आव्हान करके किया। फलस्वरूप कतिपय अधिकारियों के बंगले को लूटा गया। तदनन्तर दूसरे दिन विद्रोहियों में से कुछ सैनिक दमोह की ओर चले गये जबकि शेष सेना शेख रमज़ान को अपना जनरल घाषित कर दिया।[28]

आर्थिक कारण:

अंग्रेजी सरकार में सैनिकों के बेमेल वेतन, बेरोजगारी, जमीदारों की अधिकारविहीनता, अंचल के ग्रामों की बुरी आर्थिक व्यवस्था, गांवों के कुटीर उद्योगों का बन्दा होने इत्यदि से सामान्य जीवन जीना कठिन हो गया। उनके समक्ष रोजी–रोटी कमाने की अनिश्चितता के बादल छा गये। ऐसे अनेक बूनियादि घटक हैं जिन्होंने तदयुगीन ग्रामीण समाज की अर्थिक संरचना को तहस–नहस कर दिया। यहां तक कि कृषि भी अग्रेज अधिकारियों के दबाव में की जाने लगी, कृषक मनचाहा धान या अन्य फसल बोने के लिए स्वतंत्र नहीं रह गया था।[29] इसके विपरित भू–राजस्व की वसूली से किसान और भी विवश हो गये। अंग्रेज किसानों को बेहतर कृषि उपकरण उपलब्ध करा सकते थे जो औद्योगिक और कृषि क्रांतियों के फलस्वरूप इंगलैड में प्रचलित थे। परन्तु उनका उद्देश्य इस अंचल की अर्थव्यस्था का विकास न करके देश के अन्य भागों में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने के लिए यहाँ के प्राकृतिक और अन्य संसाधनों का दोहन करना था।[30] के. एल. श्रीवास्तव ने इस बात का उल्लेख किया है कि ''मालवा में पोस्ते की खेती कम्पनी के अफीम व्यापार का बढ़ावा देने के लिए कराई गई। इसने किसानों को असंतुष्ट हो गये। भू–राजस्व के अलावां लोगों पर लगाया जाने वाला दूसरा

Impact Factor : 1.9508(UIF)

महत्वपूर्ण कर 'नमक पर कर'[31] जो होशंगाबाद, बैतुल, नरसिंहपुर के कुछ भागों को छोड़कर सम्पूर्ण सागर–नर्मदा क्षेत्रों में लगायी गई। इससे अमीर तथा गरीब दोनों वर्गों में काफी आक्रोश उत्पन्न हो गया।''[32] इस प्रकार कम्पनी सरकार ने आर्थिक रूप से यहाँ के लोगों को पूर्णतया पराश्रित बना दिया।

इस प्रकार उक्त घटनाओं से क्षुब्ध होकर 1857 की क्रांति में भारतीय जनता ने अंग्रेजी हुकूमत को अस्वीकार कर स्वतंत्र भारत का शंखनाद किया। आर्सकिन ने यह वर्णन किया है कि किस प्रकार जनवरी 1857 के प्रारम्भ में छोटी चपातियां सागर के गांव–गांव में और दूसरे जिले में रहस्यमय ढ़ंग से भेजी गयी थी।33 निश्चह ही उनमें कुछ सन्देश थे और आगामी विद्रोह के सम्बन्ध में एक चेतावनी थी ताकि जनता इसके लिए तैयार हो जाय। लेख से स्पष्ट है कि आरंभ से ही देश के अलग–अलग और सुदूर भागों में संन्यासियों, किसानों, कारीगरों, मजदूरों, सैनिकों, सामंतों, साहूकारों, गरीबों एंव धनिकों द्वारा अंग्रेंजों को उनके दमनकारी नीति के विरोध में निरंतर चुनौतियाँ दी जा रही थी। सन्यासी–फकीर विद्रोह, किसानों विद्रोह, बुनकर विद्रोह, सैनिक विद्रोह आदि के द्वारा भारतीय वर्ग उद्योग धन्धों और व्यापार के योजनाबद्ध लूट शोषण और तबाही, की नीति के खिलाफ लगातार विरोध करते रहे। फलस्वरूप पराधीनता की बेड़ियों तोड़ते हुए सन् 1857 में सम्पूर्ण हिन्दुस्तान जागृत हो उठा।

दिल्ली का सम्राट बहादुरशाह एक महान कवि भी था। क्रांतियुद्ध के रंगमंच पर प्रवेश करने के पूर्व ही उसने एक गज़ल की रचना की थी जिसे विनायक दामोदर सावरकर ने अपने ग्रंथ में उल्लेख किया है। उसने स्वतः यह प्रश्न किया था कि–

दमदमें में दम नहीं अब खैर मांगो जान की।
ऐ ज़फर! ठंडी हुई श्मशीर हिन्दुस्तान की।।

(प्रतिदिन तुम थकते चले जा रहे हो! हे सम्राट!(अंग्रज) तुम अपने प्राणों की रक्षा के लिए प्रार्थना करो, क्योंकि अब भारत की तलवार सदैव के लिए टूक–टूक हो गयी है।) उन्होंने इस प्रश्न का उत्तर भी इन शब्दों में दिया–

गाजियों में बू रहेगी अब तलक ईमान की।
तख्ते लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।।

(हमारे वीरों के अन्तःकरण में जब तक आत्मविश्वास और देशभक्ति की भावना विद्यमान है तबतक हिन्दुस्तान की पावन कृपाण लंदन तक भी वार करती रहेगी।)

सन्दर्भ ग्रंथ

1.श्रीवास्तव, के. एल.,''दि रिव्होल्ट ऑफ 1857 इन सेंट्रल इंडिया–मालवा'',1966, पृ. 10–18
2.व्यास, डॉ. आर.पी., ''आधुनिक राजस्थान का वृहत्त इतिहास,'' पृ. 71–73
3.वही, पृ. 74 एवं स्मारिका, मध्यप्रदेश–स्वतंत्रता संग्राम सैनिक महाधिवेशन, पृ. 21–22
4.मिश्रा, डी. पी., (सं.) हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन मध्यप्रदेश (1956), पृ. 82
5.स्मारिका, वही , पृ. 21, एवं विनायक दामोदर सावरकर, '1857 का स्वातंत्रय समर'' प्रभात पेपर बैक्स (प्रभात प्रकाशन्), नई दिल्ली, 2007, पृ. 18
6.स्मारिका, वही, पृ. 65–70
7.एच. पी. चाटोपाध्याय, '' द सिपाय म्यूनिटि : ए सोशल स्टडी एण्ड एनोलिसिस (1987), पृ. 180
8.डॉ. पूरन सहगल, डूंगजी जवारजी, पृ. 8
9.मिश्र, द्वारका प्रसाद, 'म.प्र. में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास'' स्वराज संस्थान, भोपाल, 2002, पृ. 37
10.बी. एस. कृष्णन, ''सागर, म.प्र. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स'' गवर्नमेंट सेंट्रज प्रेस, भोपाल, 1967, पृ. 66
11.राबर्टस, पी. ई., हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिस इण्डिया अण्डर द कम्पनी एण्ड द क्राउन (रीप्रिंट, 1954), पृ. 350
12.मुखरया, डॉ. पी. एस., ''1857 की क्रांति सागर और नर्मदा क्षेत्र '' स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल, 2008, पृ. 55–56
13.खान, सर सैयद अहमद खान, असबाव–ए–हिन्द, पृ. 15, एस. एन., सिन्हा, ''द रिवोल्व ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड, 1982, पृ. 40
14.एस. एन. सिंन्हा, '' द रिवोल्व ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड, 1982, पृ. 40
15.सावरकर, विनायक दामोदर, वही , पृ. 15–21
16.भट्ट, प्रद्युम्न कुमार,'' झालावाड़ राज्य का इतिहास (अप्रकाशित शोध–प्रबंध), पृ. 174–75
17.शर्मा, गौतम, इण्डियन आर्मी थ्रू एजेज (1966), पृ. 238
18.होम्स, टी. आर., हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूनिटी'' (1885), पृ. 79
19.ग्रोवर, बी.एल. एण्ड यशपाल, 'आधूनिक भारत का इतिहास'' एस चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, पृ. 266
20.मुखारया, डॉ. पी. एस., वही, पृ. 72
21.सावरकर, विनायक दामोदर, वही, पृ. 103–105
22.आर्सकिन–नेरेटिस ऑफ इवेंट्स दी आउट ब्रेक ऑफ डिस्टरबेंसेज एण्ड दी रेस्टोरेशन ऑफ अथारिटी इन दी सागर एण्ड नर्मदा टेरिटरीज इन 1857–58, पैरा 6–8,
23.श्यामलदास, वीर विनोद, खण्ड–2, भाग–3, पृ. 1968, डॉ. रघुवीर सिंह,''मालवा के महान विद्रोह कालीन अभिलेख, पृ. 120–24
24.मुखारया, डॉ. पी. एस., वही, पृ. 69
25.डॉ.ताराचंद,''भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास'', भाग–2, पृ. 58
26.काये एण्ड मालसन, हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जिल्द–I (1870), पृ. 467, एण्ड टी. आर. होम्स , वही , पृ. 76
27.श्रीवास्वत, भगवानदस,'1857 की क्रांति और विद्रोही राज बख्तबली', भोपाल, 1995, पृ. 46–47
28.मिश्र, द्वारका प्रसाद, वही, पृ. 37
29.सावरकर,, वि,दा,, वही, पृ. 19, एवं डॉ. के. एल. श्रीवास्तव, वही, पृ. 57–58
30.चाउफिन, डी. ई. '' सोसायटि एण्ड इकॉनामी इन सागर नर्मना टेरीटेरीज, 1818–1861, पृ. 254
31.उल्लेखनीय है कि सागर और नर्मदा क्षेत्रों में राजपूताना के नमक तालाबों से आये हुए नमक का उपभोग किया जाता था। इस पर पहली बार शुल्क 9मई 1855 को उत्तर पश्चिमी प्रांतो के लेफ्टीनेन्ट जनरल द्वारा जारी एक अधिसूचना के द्वारा लगायागया ।
32.श्रीवास्तव. डॉ. के. एल. '' वही'' पृ. 66–70,
33.आर्सकिन–नेरेटिस ऑफ इवेंट्स दी आउट ब्रेक ऑफ डिस्टरबेंसेज एण्ड दी रेस्टोरेशन ऑफ अथारिटी इन दी सागर एण्ड नर्मदा टेरिटरीज इन 1857–58, पैरा–5

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net